सी-डैक
CDAC

सितम्बर 2015

अभिव्यक्ति

वार्षिक हिंदी पत्रिका

सप्तम अंक

प्रगत संगणन विकास केंद्र

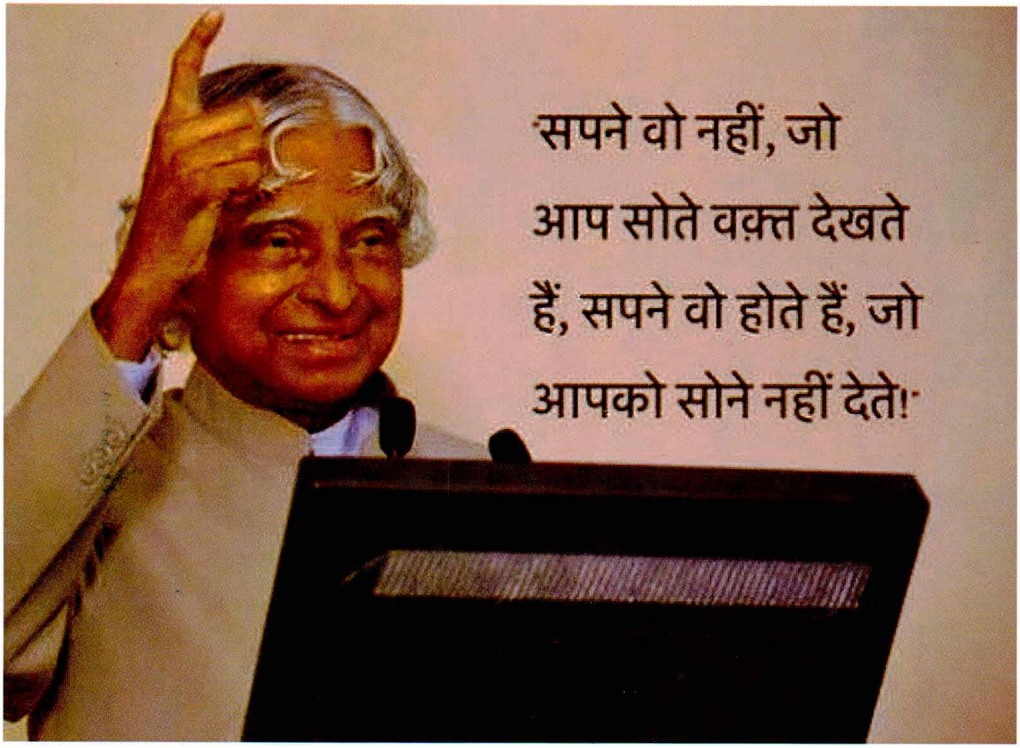
'सपने वो नहीं, जो
आप सोते वक़्त देखते
हैं, सपने वो होते हैं, जो
आपको सोने नहीं देते।'

अभिव्यक्ति

संरक्षक

डॉ. बी. के. मूर्ती

संपादक मंडल

सुनीता अरोड़ा

डॉ. आरती नूर

सोमी राम

संपादन सहयोग

डॉ. किरन शुक्ल

अजय पाल

विशेष सहयोग

नवीन चन्द्र

प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने व्यक्तिगत विचार हैं, उनसे सी–डैक, नोएडा और संपादकों का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

सी-डैक
CDAC

प्रगत संगणन विकास केन्द्र

अनुसंधान भवन, सी–56/1, संस्थागत क्षेत्र

सैक्टर– 62, नोएडा– 201307

फोनः 0120–3063311–13, फैक्स– 0120–3063317

विषय सूची

क्रम सं.	रचना	लेखक/संकलनकर्ता	पृष्ठ सं
1	कलाम तुम्हें सलाम (श्रद्धांजलि)	सुनीता अरोड़ा	9
2	क्लाइंट–सर्वर आर्किटेक्चर और क्लाउड कंप्यूटिंग (लेख)	अमिय मोहंती	10–11
3	आइए कॉग्निटिव कंप्यूटिंग को समझें (लेख)	अमित कुमार	12
4	एक नया राग गाएं (कविता)	नवीन चन्द्र	13
5	महादेवी वर्मा: शूलों में नित मृदु फूलों सा जीवन (लेख)	डॉ. किरन शुक्ल	14–15
6	सुन्दर हाथ (लघु–कथा)	पलविन्द्र सिंह	16
7	माँ के हाथ (मुक्तक)	डॉ. किरन शुक्ल	16
8	सूचना प्रौद्योगिकी युग और हिंदी का बढ़ता वर्चस्व (लेख)	दीपांकर गांगुली	17–18
9	मोबाइल फोन (कविता)	रामबिलास चौधरी	19
10	हर पल मैं खुश हूँ (कविता)	अनिल कुमार	19
11	कृत्रिम दिल (कविता)	अजय पाल	20
12	जांच जो हैं सेहत के लिए जरूरी (लेख)	अनिल कुमार	21–22
13	कुछ उपयोगी नुस्खे (लेख)	रामजी गुप्ता	22–23
14	हम खुश नहीं होना जानते (लेख)	भुवन दास	23
15	धैर्य (लेख)	दीपांकर गांगुली	24
16	पर्यावरण संरक्षण बनाम शहरी विकास (लेख)	धर्मेन्द्र कुमार शर्मा	25
17	जिंदगी की हकीकत (कविता)	अजय पाल	26
18	रिश्ता (कविता)	रामजी गुप्ता	27
19	चाय का कप (कविता)	पुनीत सिंह खुराना	28
20	भारत के विकास के लिए भारतीय भाषाएं जरूरी क्यों? (लेख)	पलविन्द्र सिंह	29–30
21	जुआरी	राजेन्द्र सिंह	31–32
22	बचपन के अहसास	राजेन्द्र सिंह	33
23	राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के संबंध में सी–डैक, नोएडा द्वारा किए गए कार्यो का विवरण (रिपोर्ट)	सोमी राम	34–35
24	हिन्दी पखवाड़ा – 2014		36–37

सी डैक
CDAC

कार्यकारी निदेशक, सी-डैक, नोएडा का संदेश

हमारी संस्था सी–डैक, नोएडा की गृह पत्रिका 'अभिव्यक्ति' का सातवां अंक सजा–संवार कर आपके समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है। किसी भी संस्था की सफलता इस बात की साक्षी बनती है कि वहां के कार्मिक और उनके द्वारा किया गया उद्यम एक रचनात्मक परिणति कर, एक ऐसा स्वरूप ले रहा है जो दूसरों के लिए मिसाल कायम कर सके।

यह पत्रिका हमारे कार्यालय में हिन्दी के प्रचार–प्रसार में किए गए प्रयासों का एक आइना है। हम कंप्यूटर प्रौद्योगिकी की तकनीकों का विकास करने के साथ–साथ हिन्दी लेखन को भी प्रोत्साहित और पल्लवित करते रहते हैं। अधिकारियों/कर्मचारियों की हिन्दी में मौलिक सोच कल्पनाओं की अनूठी उड़ान है, जोकि तकनीकी लेखों, आलेखों, कविताओं का स्वरूप लेकर बढ़ी है और हमारा प्रयास होगा कि यह पत्रिका अपने कलेवर को और अधिक संवारे निखारे। राजभाषा हिन्दी के प्रयोग के संवैधानिक प्रावधानों के निर्वहन की दिशा में यह पत्रिका मील का पत्थर साबित होगी।

अंत में इस पत्रिका की संरचना और संलेखन करने वाले सभी जिज्ञासुओं एवं रचनाकर्मियों को साधुवाद देता हूँ और आशा करता हूँ कि पत्रिका अपने स्वरूप में फले, फूले और समृद्ध होवे।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित,

बी के मूर्ती

(डॉ. बी. के. मूर्ती)

संपादकीय

आचार–विचारों की समरसता और मन का उद्वेग जब कल्पनाओं की उड़ान भरना शुरू करता है तब रचनाधर्मी सभी नकारात्मक गतिविधियों को नकार कर शब्द–दर–शब्द विचारों का एक ऐसा बांध बनाता है, जहां से होकर गुजरता है सी–डैक का चिन्तन। हम भले ही नई–नई कंप्यूटर तकनीकों को बनाने और बढ़ाने में लगे हों, मन के एक कोने में हमारी अपनी भाषा के प्रति लगाव बना हुआ है। विचारों के उसी बांध से फूटते हुए अपने निर्झर इस पत्रिका में पंक्तिबद्ध किए गए है। राजभाषा का सम्मान हमारी सर्वोच्च प्राथमिकताओं में से एक है।

इस पत्रिका में गैर–तकनीकी लेखन के साथ तकनीकी लेखन को भी बुलावा और बढ़ावा दिया गया है। इसके साथ ही भारत के विभिन्न भाषा–भाषियों को भी उनके हिन्दी के प्रेम को बढ़ावा देने के लिए कार्यकारी निदेशक महोदय द्वारा एक वर्ग गैर हिन्दी भाषियों का भी रखने का निर्देश दिया गया। यह एक शुभ संदेश रहा और ऐसे लेख हमारे पास बड़ी संख्या में आए। अब रहा प्रश्न पुरस्कृत होने का तो हमने पूरा–पूरा प्रयास किया कि पैनल द्वारा न्यायसंगत पुरस्कार दिए जाएं।

अभिव्यक्ति में व्यक्त ऐसे लेखों की निष्पक्षता से जांच–परख करके आपके समक्ष लाया जा रहा है। आपके सुझावों का सदैव स्वागत रहेगा। पुरस्कार की श्रेणी में भाषा, भाव, तथ्य और तारतम्यता का ध्यान रखकर लेखों की परख की गई है। इन लेखों का पत्रिका में प्रकाशन ही दर्शाता है कि हमारी सोच, कल्पनाओं की ऐसी उड़ान है, जिसकी मंजिल और इरादे ऊँचे हैं। हमें एक ऐसा मानक स्थापित करना होगा जो पत्रिकाओं की पंक्ति में एक मिसाल कायम कर सकें।

चलो अभीष्ट मार्ग पर सहर्ष खेलते हुए।
विपत्ति विघ्न जो पड़ें उन्हें ढकेलते हुए।।

आइए हम सी–डैक कर्मी हिन्दी की दिशा और दशा को नई ऊचाइयों तक ले जाएं।

– संपादक

कलाम तुम्हें सलाम

– सुनीता अरोड़ा

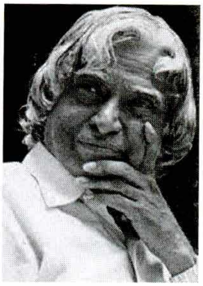

खुली आंखों से सपने साकार करने वाले परमाणुवीर डॉ. अब्दुल पाकिर जैनुलाब्दीन अब्दुल कलाम की अपूरणीय क्षति की भरपाई काफी लम्बे समय तक शायद ही हो सके। भले ही वे दुनियां को छोड़कर अनन्त यात्रा पर चले गए हैं परन्तु हमारे लिए वे हमेशा प्रणेता मसीहा, मार्गदर्शक और जिज्ञासा का स्रोत ही बने रहेंगे। वे नाकामी से सबक लेकर उससे उबरने का रास्ता निकाल ही लेते थे। वे समूची मानवता के लिए एक पैगाम थे। देश के बारे में कलाम का अनूठा नजरिया था, जो हमारे लिए बेमिसाल है। भारत की इस अपूर्व ताकत को पहचानकर और स्वप्नों को साकार करके उन्होंने भारत को इतना कामयाब और सशक्त बना दिया कि दुनियां भी आज इसका लोहा मानने लगी है। दूरदर्शिता और देश भक्ति का जज्बा कलाम को **"भारत माँ का सच्चा पुत्र"** बनाता है। उनकी शख्सियत और सोच ने भारत को एक मजबूत राष्ट्र बनाने में योगदान दिया और वह मिसाइल मैन के रूप में जाने गए।

मानवीय मूल्यों के सम्वर्धन के लिए शांति आवश्यक है और डॉ. कलाम उस भारत के प्रतीक बनें जहां शक्ति और शांति का संतुलन बना हुआ है और भारत इसे साथ लेकर चलना जानता है।

डॉ. कलाम का जीवन भारत और विश्व में बसे करोड़ों युवाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत बना रहेगा। दूसरे शब्दों में भारत यदि आज सशक्त हुआ है तो उनके योगदान और उपलब्धियों की वजह से। एक प्रौद्योगिकीवेत्ता, एक शिक्षक और मार्गदर्शक के रुप में राष्ट्र हमेशा कृतज्ञता अर्पित करता रहेगा। कलाम हमें छोड़कर तो चले गए हैं परंतु आधुनिक भारत के निर्माता के रुप में उन्हें हमेशा–हमेशा याद किया जाता रहेगा। नम आंखों से तुम्हें हमारी विनम्र श्रद्धांजलि........

काश के यों आसां होता सबका इंसा होना, हमने देखा है,
पंख लगाकर एक फरिश्ते का कलाम होना।

★★★

क्लाइंट-सर्वर आर्किटेक्चर और क्लाउड कंप्यूटिंग

अमिय मोहंती
परियोजना अभियन्ता

परिचय :

क्लाउड कंप्यूटिंग वास्तव में इंटरनेट–आधारित प्रक्रिया और कंप्यूटर एप्लिकेशन का इस्तेमाल है। गूगल एप्स क्लाउड कंप्यूटिंग का एक उदाहरण है जो बिजनेस एप्लिकेशन ऑनलाइन मुहैया कराता है और वेब ब्राउजर का इस्तेमाल कर इस तक पहुंचा जा सकता है।

कंप्यूटर की सहायता से कोई काम करने के लिए किसी सॉफ्टवेयर की जरूरत होती है। जैसे अगर कोई MS WORD File बनानी है तो MS WORD सॉफ्टवेयर चहिए होता है। पहले उसे कंप्यूटर पर स्थापित (Install) करते हैं और कंप्यूटर MS WORD File के लिए तैयार हो जाता है। MS WORD को स्थापित करने के लिए उसका लाइसेंस खरीदना पड़ता है। अगर दस लोगों को वही काम करना पड़े तो दस लाइसेंस खरीदने पड़ेंगे। इस तरह जब एक सा काम करने वालों की संख्या बढ़ जाती है तो एक नए तरह के कंप्यूटिंग आर्किटेक्चर की आवश्यकता पड़ती है, उसे क्लाइंट–सर्वर आर्किटेक्चर कहते हैं। इस सिस्टम में साफ्टवेयर को दो टुकड़ों मे बांट देते हैं, एक को क्लाईंट और दूसरे को सर्वर कहते हैं। क्लाईंट उपभोक्ता के कंप्यूटर में रहता है। क्लाईंट सर्वर से वांछित सूचना मांगता है, सर्वर सूचनाओं को एकत्रित करता है और उनकी प्रोसेसिंग करके मांगी गई सूचना प्रदान करता है। कुछ क्लाईंट मुफ्त में उपलब्ध होते हैं। क्लाईंट को आपकी आवश्यकता के अनुसार सुविधापूर्वक काम करने के लिए प्रोग्राम किया जाता है।

क्लाउड कंप्यूटिंग एक ऐसी तकनीक है जिसमें सबकुछ सर्वर पर ही होता है। डाटा और प्रोग्राम दोनों सर्वर पर ही होते हैं और उसे इंटरनेट एवं ब्राउजर की सहायता से कहीं से भी डाटा और उस डाटा को प्रोसेस करने का साफ्टवेयर प्राप्त कर सकते हैं और उसमें बदलाव कर सकते हैं या उसे मिटा सकते हैं। डाटा को प्रोसेस करने का साफ्टवेयर भी ब्राउसर में ही रन होता है। क्लाउड कंप्यूटिंग के लिए इंटरनेट का होना जरूरी होता है।

GMail, Facebook जैसे साईट क्लाउड के ही प्रारम्भिक रूप हैं। इन सभी साइट्स पर अपना डाटा जो कि फोटो, वीडियो, आडियो या अन्य प्रकार के हो सकते हैं, जिसको उपभोक्ता संरक्षित कर सकते हैं, उन्हें हटा या बदल सकते हैं। क्लाउड कंप्यूटिंग भविष्य में कंप्यूटर से सभी तरह के डाटा और साफ्टवेयर को हटा देगा। सिर्फ इंटरनेट और ब्राउजर की आवश्यकता होगी।

आवश्यकताः

मान लीजिए एक वेबसाईट बनी है जो कि साधारण से सर्वर पर चल रही है। इसी साईट को बहुत लोगों ने पसन्द किया और उसको देखने वालों की संख्या बहुत बढ़ गई। अब ये सर्वर उतने लोगों को रेस्पांस नहीं कर पा रहा है, तो और अधिक क्षमता का सर्वर लगाना

पड़ेगा, जो कि काफी खर्चीला काम है। फिर भी नया अधिक क्षमता का सर्वर लगा देने के कुछ दिनों बाद साईट को देखने वालो की संख्या काफी घट गई। ऐसी स्थिति में क्लाउड कंप्यूटिंग की आवश्यकता होती है।

क्लाउड कंप्यूटिंग को दो भागों मे बांट सकते हैं। पहला ब्राउजर, जो कि उपभोक्ता के पास है, और दूसरा सर्वर, जिसपर एप्लिकेशन हैं और जो इंटरनेट पर है। इन सबके मेल को क्लाउड कहते हैं। क्लाउड के अंतर्गत बहुत सारे डेटाबेस सर्वर, एप्लिकेशन सर्वर, नेटवर्क सर्वर और लोड कंट्रोल सर्वर आते हैं। ये आपस में इस तरह से समायोजित रहते हैं कि एक यूनिट की तरह कार्य करते हैं। ये इतने सक्षम होते हैं कि लाखों लोगों की जरूरत को एक साथ पूरा कर सकते हैं। इसका लोड कंट्रोल सर्वर आने वाले लोड को अलग–अलग सर्वर में बांट देता है जिससे कि काम बहुत जल्दी से हो जाता है।

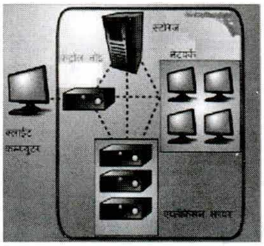

नुकसानः

जैसे कि सूचना उपभोक्ता के पास नहीं होती है, इसलिए उसकी सुरक्षा के लिए दूसरे पर निर्भर रहना होता है। सारी सूचना, सेवा प्रदाता के पास होती है। अगर भविष्य मे कुछ राजनीतिक, वैश्विक या लेन–देन से सम्बन्धित कोई भी समस्या हो गई तो उपोभोक्ता के पास कुछ नहीं बचेगा। दूसरी समस्या है कि क्लाउड का उपयोग करने के लिए उपभोक्ता के पास ऐसी क्षमता का इंटरनेट होना चाहिए जो कि लगातार सेवा देता रहे। अगर इंटरनेट बन्द हो गया तो सब कुछ बन्द हो जाएगा। सबसे बड़ी समस्या यह है कि अगर कभी सेवा प्रदाता को बदलना हुआ तो हमें सब कुछ एक कम्पनी से दूसरे के पास भेजना होगा जो कि सरल नहीं होगा।

उपयोगः

आज के समय में बहुत सारी कम्पनियाँ क्लाउड पर अपनी सर्विस प्रदान करती हैं। इसमें उपभोक्ता को हार्डवेयर या सॉफ्टवेयर के बारे में ज्यादा चिंतित नहीं होना होता है और न ही हर साफ्टवेयर के लाइसेंस के बारे में चिंतित होना होता है। सिर्फ अपनी आवश्यकता के अनुसार सेवाएं सेवा–प्रदाता कम्पनी से लेनी होती है, जिसका शुल्क चुकाना होता है। बाकी सारा काम सेवा–प्रदाता कम्पनी का है। वह उपभोक्ता को ब्राउजर पर एप्लिकेशन प्रदान करेगी और उपभोक्ता के डाटा को सुरक्षित रखेगी। वर्क लोड के अनुसार रिसोर्स को बढ़ाती या घटाती रहेगी। कुछ क्लाउड सेवाएं मुफ्त भी प्रदान की जाती हैं। जैसे गूगल डॉक्स। इसकी सहायता से उपभोक्ता कहीं से भी अपनी MS Word File बना सकते हैं, बिना MS WORD सॉफ्टवेयर के। गूगल डॉक्स ब्राउजर पर पूरा एडिटर प्रदान करता है, जिसकी सहायता से उपभोक्ता WORD Document कही से भी बना कर संरक्षित कर सकते हैं और कहीं से भी वापस पुनः प्राप्त कर सकते हैं। अपने WORD Document को अपने पास सी.डी. या पेन ड्राईव में रखने की जरूरत नहीं होती है।

निष्कर्षः-

कुल मिलाकर क्लाउड कंप्यूटिंग सेवाओं की गति और गुणवत्ता बढ़ाती है। कंपनी, क्लाउड कंप्यूटिंग के जरिए अपने ग्राहकों को वही उत्पाद और सेवाएं उपलब्ध कराती है जिनकी उपभोक्ता मांग करते हैं।

★★★

आइये कॉग्निटिव कंप्यूटिंग को समझें

अमित कुमार
परियोजना अभियंता

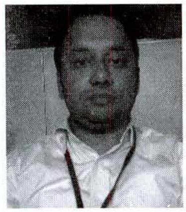

हम रोजमर्रा के काम–काज में आमतौर पर जिस कंप्यूटर का इस्तेमाल करते हैं वह प्रि–डिफाईंड प्रोग्रामिंग पर आधारित होता है और प्रोग्रामिंग इंस्ट्रक्शन के आधार पर काम करता है। ऐसा सिस्टम 'इफ देन व्हॉट' की तर्ज पर काम करता है। इस तकनीक को आधार बनाकर कंप्यूटर अपनी गलतियों को स्वयं सुधारने में सक्षम नहीं होता है और सोचने–समझने की क्षमता का भी अभाव होता है।

कॉग्निटिव कंप्यूटिंग दरअसल भविष्य का वह कंप्यूटिग मॉडल है, जो कंप्यूटर साइंस, ब्यूटी साइंस जैसे अलग–अलग क्षेत्रों के मूल सिद्धांत पर आधारित है। इसके तहत कंप्यूटर को कुछ इस तरह से विकसित करने का प्रयास किया जा रहा है जो मनुष्य की तरह ही सोचने समझने की क्षमता से युक्त हो। कॉग्निटिव कंप्यूटिग का सिद्धांत इस बात पर बल देता है कि कंप्यूटिंग सिस्टम में भी बहुत हद तक मानव की तरह सोचने की क्षमता विकसित की जाए। यह कंप्यूटिंग सिस्टम भी अपने आस–पास के माहौल को ठीक उसी तरह महसूस कर सके जैसे मनुष्य अपनी पांचों इन्द्रियों की सहायता से कर पाता है। कॉग्निटिव कंप्यूटिंग सिस्टम किसी गलती या गलत एप्रोच के कारण बार–बार गलत उत्तर नहीं देगा, बल्कि यह उस गलत एप्रोच की व्याख्या कर पुनः नई एप्रोच के आधार पर सही उत्तर देने की कोशिश करेगा। यह सिस्टम न केवल अपनी गलतियों से सबक लेगा, बल्कि भविष्य में उन गलतियों को दोहराने की आशंका भी न के बराबर होगी। इस दिशा में अभी तक काफी काम किया जा चुका है। आज कंप्यूटर और स्मार्ट फोन बहुत कुछ करने में सक्षम है, घर बैठे आप देश–विदेश के मौसम का हाल जान सकते हैं और पलक झपकते ही सूचनाओं का आदान–प्रदान कर सकते हैं। लेकिन क्या ये डिवाइसेज आपको टच एंड फील का अहसास करा सकते हैं, जवाब नहीं में होगा। लेकिन अब वह दिन दूर नहीं जब कॉग्निटिव कंप्यूटिंग पर आधारित सिस्टम मनुष्य की पांचों इन्द्रियों दृष्टि (Seeing), श्रवण (Hearing), स्वाद (Taste), सूघना (Smell), और वाक् (Speech) के आधार पर काम करने लगेंगे। हो सकता है आने वाले कुछ वर्षों में आपका कंप्यूटर चीनी और नमक में भी स्वाद के आधार पर फर्क करना शुरू कर दे। यह भी संभव है कि भविष्य में आप अपने मोबाइल डिवाइस की सहायता से टच एंड फील का अनुभव करने लगें और स्क्रीन पर मौजूद किसी प्रोडक्ट के इमेज से ही उसके गुणों को महसूस करने लगें।

आईबीएम द्वारा कॉग्निटिव कंप्यूटिंग प्रोजेक्ट पर काफी काम किया जा रहा है। जिसमें न्यूरो साइंस, नैनो साइंस, सुपर कंप्यूटिंग आदि के सिद्धांत को शामिल किया गया है। कॉग्निटिव कंप्यूटिंग आज की आधुनिक वैज्ञानिक शैली है तथा आई.टी. सेक्टर में भविष्य की मांग है। इसका प्रयोग मुख्यतः मानव मस्तिष्क से प्रेरित कृत्रिम बुद्धिमत्ता पर आधारित प्रोडक्ट्स और कंप्यूटरीकृत प्रोग्राम के डेवलपमेंट के लिए किया जाता है।

★★★

एक नया राग गाएं

नवीन चन्द्र
हिन्दी प्रकोष्ठ

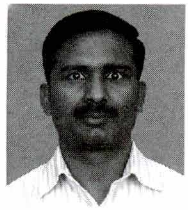

हम सीखें, साथ–साथ चलना
एक स्वर में साथ गुनगुनाना
हमारा तुम्हारा स्वर एक ही दिशा में
एक ही राग आलापें
'संगच्छध्वं' की तान पर
देश की प्रगति की तस्वीर उकेरता
एक मानचित्र दर्शाएं
हम तुम सब उसी माटी की धरोहर को
तुम्हारे–हमारे स्वरों से एक बनती रागिनी को
विभिन्न आयामों से, रागों से,
तालों से, सुरों की थाप से
भारत को सरसाएं
चलो मिलकर एक राग बनाएं
भारत को 'स्वर्ग' बनाएं।

★★★

भाषा ही राष्ट्र, साहित्य और संस्कृति का निर्माण
करती है, आदर्शों की सृष्टि करती है।
– मुंशी प्रेमचंद्र

महादेवी वर्माः शूलों में नित मृदु फूलों सा जीवन

डॉ. किरन शुक्ल
सलाहकार (हिन्दी)

सृजन की परिकल्पना को साकार करने का आशीर्वाद देती हुई महादेवी जी की वह गिरा–गम्भीर वाणी आज भी मेरे दिमाग में ताजा है। वह बोलतीं तो लगता कि गगन थम गया है, आकाश कहीं अन्दर से बेजुबान होकर टकरा गया है और उसमें से शब्द नहीं फूट पा रहे हैं। शब्दों की गहनता, भारीपन और वजनी शब्दों की थाप आज भी मेरे हृदय–रूपी द्वार पर एक हल्की–सी दस्तक दे जाती है। महादेवी जैसे महान और सार्थक नाम की प्रतीक थीं, वैसी ही म ड़ान उनकी आवाज और उनका कृतित्व था।

शब्दों के कलेवर को महादेवी ने अपनी परिकल्पना में साकार किया था। अपने जीवन में गुना था। जो भी उन्हें गाहे–बगाहे मार्ग में मिल जाता, वह उसकी सहायता करतीं, उसे संजोती, उसे आगे बढ़ने, ऊपर चढ़ने का सम्बल देतीं। शब्दों, विचारों की गरिमा से उसका मन इतना भर देतीं कि उसे जीवन भर न भूलता। मैं उनकी इतनी प्रशंसा इन शब्दों में इसलिए कर रही हूँ क्योंकि मुझे याद आता है कि मैंने एकाध सम्मेलन में उन्हें सुना ही था। फिर भी मिलने पर उन्होंने मुझे ऐसा अहसास कभी नहीं होने दिया कि मैं अपरिचिता हूँ, उनसे पहली बार मिल रही हूँ। उनका व्यक्तित्व लुभावना और सम्मोहक था। वे हमेशा सफेद खादी की किनारीदार सूती धोती पहना करती थीं। ढका हुआ सर जैसे एक सतीत्व और नारीत्व का हल्का सा अवलम्ब, उन्होंने ओढ़ रखा हो। जब मैं उनसे मिली, तब उन्होंने काफी मोटा चश्मा लगा रखा था।

हमारे नगर इलाहाबाद में एक बहुत प्रतिष्ठित आर्य समाज में, धर्म सेवा में आस्था रखने वाले एक होम्योपैथ डॉक्टर हुआ करते थे। वे अपने घर पर मरीजों को बुलाया करते थे। उनका अलीशान बड़ा सा खुला हवादार घर था। उसके एक बरामदे के एक छोटे से कक्ष में पड़ी बेंचों पर हमें इंतजार करना पड़ता था और महादेवी हमारे साथ उसी पंक्ति में मेरे रूबरू बैठी होतीं– दवा का इंतजार करती हुई। तब हम युवा थे, हममें जोशो–खरोश था। हम महादेवी को देखते, श्रद्धा से अवनत हो जाते, कुछ सुगबुगे से, सहमे से। उन्हीं के बगल में बैठे, उन्हें कनखियों से देखा करते। कभी–कभी श्रद्धावश यही कह देते कि आपका नम्बर है, आप दवा ले लें। परन्तु उन्होंने कभी जल्दबाजी नहीं दिखाई और हमेशा पंक्ति में बैठे रहना ही मुनासिब समझा। इससे हमें उनके उस सहज स्वभाव का पता चलता कि वह हर आम व्यक्ति को उसका जायज हक देना चाहती थीं।

हमारी एम.ए. अंतिम वर्ष की परीक्षाएं शुरू होने वाली थीं। विदाई की बेला थी। सभी सहपाठी परीक्षा के बाद बिछुड़ने वाले थे, अपने जीवन के ध्येय की प्राप्ति की दिशा में कदम बढ़ाने वाले थे। प्रिय मित्रों, स्नेहमयी सखियों, पूज्यनीय एवं वंदनीय अध्यापकों से नाता टूटने वाला था। अबके बिछड़े, न जाने कब मिले। इसलिए स्मृतियों को संजोने की कोशिश हो रही थी। इलाहाबाद विश्वविद्यालय के अपने संगी–साथियों के मैंने कई आटोग्राफ लिए। इस सिलसिले के बाद ही मैं डॉ. सक्सेना के पास अपनी दवा लेने गई थी। वापस लौटते हुए मुझे महादेवी जी उसी तरह पंक्ति में प्रतीक्षारत मिली थीं। पंक्ति में एक अन्य महिला हमारे बीच में बैठी हुई थी। उसके सामने तो मेरा साहस न हुआ।

परंतु आटोग्राफ लेने की उमंग थी और जैसे ही वह महिला हम दोनों के मध्य से उठी, मैंने सहमते हुए आटोग्राफ–बुक महादेवी की ओर बढ़ा दी। कुछ सकुचाते हुए उन्होंने कहा कि यह दवा लेने का समय है, आटोग्राफ लेने का नहीं। परंतु मेरी आंखों के आग्रह को उन्होंने एक पल में ही भांप लिया और कलम निकालकर मेरी पुस्तिका में जीवन का रहस्य, मात्र दो पंक्तियों में ही लिख दिया। इन पंक्तियों को मैंने आज भी सहेज कर रखा है। जब कभी रास्ते में जरा सी कठिनाई होती है, उनकी पंक्तियां मेरे दिलोदिमाग पर छा जाती है–

शूलों में नित मृदु फूलों सा, खिलने देना अपना जीवन।

कितना गूढ़ जीवन बोध है, रहस्य है, कितनी सदाशयता है, सार्थकता है, इन पंक्तियों में। लगता है उन दिनों वे गठिया के दर्द की दवा ले रही थीं। वह दर्द उनको साल रहा होगा, शूल–सा चुभ रहा होगा। परंतु मेरे सामने वे फिर भी मुस्करा रही थीं।

आज वे हमारे बीच नहीं है परंतु उनकी आत्मा को मैं इन्हीं थोड़े–बहुत शब्दों से नमन करती हूँ। महादेवी आज हमारे बीच होतीं तो मैं हाथ बढ़ाकर उनसे मांगती कि अपने शूल मुझे देकर तुम हमेशा–हमेशा मुस्कराती रहो। विश्वास ही नहीं होता कि उनकी इस मुस्कराहट के पीछे इतने शूल रहे होंगे। आज उनकी यही गरिमामयी छवि मेरे मन–मस्तिष्क में रोज नई थाप देती है। वह सहज प्रेरणा का बिंदु बनी हुई हैं और जो महान से भी महत्तर हो जाती हैं।

★★★

राष्ट्रभाषा

अरे, अड़ो मत अलग बोलियों को ले–लेकर,
पार करेगी नाव राष्ट्रभाषा ही खेकर।
यदि अनुदार विचार धार में बह जाओगे,
कह सुनकर भी मूक बधिर ही रह जाओगे।।

– मैथिलीशरण गुप्त

सुन्दर हाथ

पलविन्द्र सिंह
प्रोजेक्ट असिस्टेंट–I
एस.एन.एल.पी.

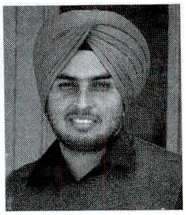

एक दिन, दूसरी कक्षा के बच्चों को शिक्षक ने सबसे पसंदीदा एक तस्वीर बनाने के लिए कहा। एक बच्चे ने एक सुंदर फूल और एक फैंसी तितली को बनाया। किसी ने सूरज, चाँद और सितारे, अपना खिलौना, नदी पर एक घर बनाना शुरू किया। कक्षा के कोने में बैठे श्याम ने जीर्ण–शीर्ण (कटे–फटे) दिखने वाले दो हाथ बनाए। शिक्षक ने हैरान होते पूछा, क्या है ये? किसके हैं, ये हाथ?

"यह दुनिया के सबसे खूबसूरत हाथ, मेरी माँ के हैं।"

"तुम्हारी माँ क्या करती है?"

"वह मजदूरन है। सड़क पर दिन भर पत्थर फोड़ती है।" श्याम ने झिझकते हुए कहा।

★★★

माँ के हाथ

डॉ. किरन शुक्ल
सलाहकार (हिन्दी)

मुझे प्यार है अपने
हाथों की सारी उंगलियों से
न जाने कौन सी ऊंगली को पकड़कर
मेरी 'माँ' ने मुझे चलना सिखाया।

★★★

सूचना प्रोद्योगिकी युग और हिंदी का बढ़ता वर्चस्व

दीपांकर गांगुली
एस.एन.एल.पी.

पिछली सदियों के इंसान को यदि जिन्दा करके कंप्यूटर, मोबाइल, लैपटॉप, आईपॉड जैसी न जाने कितनी ही चमत्कारी वस्तुएं दिखा दी जाएं तो बेचारा गश खाकर गिर पड़े। आज की पीढ़ी इन चीजों के बिना जीने की कल्पना भी नहीं कर सकती। ज्ञान के क्षेत्र में इन्सानों की सबसे बड़ी उपलब्धि इन्टरनेट की खोज है। इस युग में जो इन्टरनेट उपयोग नहीं करता, वह व्यावहारिक रूप से निरक्षर माना जाता है।

आज पूरी दुनिया में इन्टरनेट का उपयोग हो रहा है, भले ही कुछ देशों में यह प्रयोग कम है और कुछ में ज्यादा। भारत की आठ प्रतिशत से भी कम आबादी इन्टरनेट का उपयोग करती है। यह अनुपात विकसित देशों में 90% आबादी की तुलना मे काफी कम है। सूचना प्रोद्योगिकी की शुरुआत भले ही अमरीका में हुई हो, फिर भी भारत की मदद के बिना यह आगे नहीं बढ़ सकती थी। गूगल के एक वरिष्ठ अधिकारी की ये स्वीकारोक्ति काफी महत्वपूर्ण है कि आने वाले कुछ वर्षों में भारत दुनिया के बड़े कंप्यूटर बाजारों में से एक होगा और इन्टरनेट पर जिन तीन भाषाओं का दबदबा होगा, वे हैं– हिंदी, मेंडरिन और अंग्रेजी। इसकी पुष्टि इस तथ्य से होती है कि आज भारत में 8 करोड़ लोग इन्टरनेट का उपयोग करते हैं। इस आधार पर हम अमरीका, चीन और जापान के बाद चौथे नंबर पर हैं। जिस रफ्तार से यह संख्या बढ़ रही है, वह दिन दूर नहीं जब भारत में इन्टरनेट उपयोगकर्ता विश्व में सबसे अधिक होंगे।

अपने विचार दूसरों को सटीक तरीके से समझाने का माध्यम ही भाषा कहलाती है। हम कंप्यूटर से भी बात करते हैं। मतलब हम कंप्यूटर को निर्देशित करते हैं और इस निर्देशन के लिए हम जिस भाषा का प्रयोग करते हैं वह कंप्यूटर भाषा के तौर पर जानी जाती है। कंप्यूटर केवल विद्युत धारा के चालू या बंद, 0 या 1 में अंकित भाषा ही समझ सकता है। इन्हें बिट Binary Digit कहा जाता है। अतः कंप्यूटर से यदि कोई कार्य सम्पन्न करना है तो इसी भाषा मे समादेश तथा सूचनाएं देनी होती हैं। शुरुआती दौर में कागज के कार्डों में छिद्र करके कंप्यूटरों को निर्देश दिए जाते थे।

कंप्यूटर भाषाओं के निम्न प्रकार होते हैं :

1. मशीनी भाषा (Machine Language, Low Level Language, LLL)
2. संयोजन भाषा (Assembly Language, Middle Level Language, MLL)
3. उच्चस्तरीय भाषा (High Level Language, HLL)

मशीनी भाषा– कंप्यूटरों के विकास के बाद उनसे संवाद स्थापना के लिए अनुदेश बाइनरी सिस्टम में ही अंकित किए जाते थे। इससे मशीन से सीधे संपर्क होता है, इसलिए इसे मशीनी भाषा कहा जाता है। कंप्यूटर मूलतः केवल यही भाषा समझता है। आज भी कंप्यूटर से संपर्क करने के लिए हम इसी भाषा का प्रयोग करते हैं, मगर काम करने वालों को इसका आभास नहीं हो पाता हैं। उपयोगकर्ता तथा कंप्यूटर के बीच प्रयुक्त भाषाएं तथा प्रोग्राम इस कार्य को संपन्न करते रहते हैं।

उदाहरण :

अगर हम Keyboard से 'A' टाइप करते हैं तो कंप्यूटर पहले उसके लिए पूर्व से निर्धारित ASCII कोड=65 पहचानता है और फिर उसे मशीनी भाषा (A = 65 = 1000001) में बदलता है। तब हमें एक आकृति प्राप्त होती है जो A होती है। यह सारी प्रक्रिया एक सेकंड के 100000 हिस्से में होती है इस कारण हमें पता नहीं चलता। इसी तरह संसार की भाषाओं में निर्देश देने के लिए भिन्न–भिन्न कोड हैं जिससे यूनिकोड कहा जाता है।

आमतौर पर यह धारणा है कि कंप्यूटरों का बुनियादी आधार अंग्रेजी है, यह धारणा सिरे से गलत है। कंप्यूटर की भाषा अंकों की भाषा है और अंकों में भी केवल 0 और 1। जिसके माध्यम से वह दिए गए निर्देशों को समझता है। अतः कंप्यूटर के लिए सभी प्रकृत भाषाएं सामान्य हैं। भारत के सन्दर्भ में कहें, तो आई.टी. के इस्तेमाल को हिंदी और दूसरी भारतीय भाषाओं के अनुरूप ढालना ही होगा। यह अपरिहार्य है, क्योंकि हमारे पास संख्या–बल (न्यूमेरिकल एबिलिटी) है। इसी के मद्देनजर सॉफ्टवेयर की बड़ी कम्पनियां अब नए बाजार की तलाश में सबसे पहले भारत का ही रुख करती हैं। ऐसा किसी उदारतावश नहीं, बल्कि व्यावसायिक बाध्यता के कारण संभव हुआ है।

इन्टरनेट पर हिंदी के पोर्टल अब व्यावसायिक तौर पर आत्मनिर्भर हो रहे हैं। कई दिग्गज आईटी कंपनियां चाहे वह याहू हो, गूगल हो या कोई और, सब हिंदी अपना रही हैं। माइक्रोसॉफ्ट के डेस्कटॉप उत्पाद हिंदी में उपलब्ध हैं। आई.बी.एम, सन–माइक्रो सिस्टम, ओरेकल आदि ने भी हिंदी को अपनाना शुरू कर दिया है। इन्टरनेट एक्सप्लोरर, नेटस्केप, मोज़िला, क्रोम आदि इन्टरनेट ब्राउजर भी खुल कर हिंदी का समर्थन कर रहे हैं। आम कंप्यूटर उपभोक्ताओं के लिए कामकाज से लेकर डाटाबेस तक हिंदी में उपलब्ध हैं।

ज्ञान के किसी भी क्षेत्र का नाम लें, उससे संबन्धित हिंदी वेबसाइट आपके ज्ञानवर्धन के लिए उपलब्ध है। आज यूनीकोड के आने से कंप्यूटर पर अंग्रेजी के अलावा अन्य भाषाओं पर काम करना बहुत ही आसान हो गया है। यह दिलचस्प संयोग हैं कि इधर यूनिकोड इनकोडिंग सिस्टम ने हिंदी को अंग्रेजी के समान सक्षम बना दिया है और इसी समय भारतीय बाजार का जबरदस्त विस्तार हुआ है। अब भारत सरकार भी इस मुद्दे पर गंभीर दिखती है और इनस्क्रिप्ट की–बोर्ड ले–आउट को कंप्यूटर के लिए अनिवार्य कर सकती है।

हमें यह गर्व करने का अधिकार तो है ही कि हमारे संख्या–बल ने हिंदी भाषा को विश्व के मानचित्र पर अंकित कर दिया है। यह भी एक सत्य है कि किसी भी भाषा का विकास और प्रचार किसी प्रेरणा, प्रोत्साहन या दया का मोहताज नहीं होता यह तो स्वतः विकास की राह पर आगे बढ़ता रहता है। आज प्रिंट हो या इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, फिल्में हो या सीरियल्स, डिस्कवरी, जिओग्राफिक हो या हिस्ट्री या कार्टून हो सभी पर हिंदी की तूती बोलती है। ये सभी तथ्य हमें हिंदी के उज्ज्वल भविष्य के प्रति आश्वस्त करते हैं।

हिंदी के भविष्य की इस उजली तस्वीर के बीच हमें हिंदी को प्रोद्योगिकी के अनुरूप ढालना है। कंप्यूटर पर सभी सॉफ्टवेयर यहां तक की संचालन प्रणाली (ऑपरेटिंग सिस्टम) भी पूर्णतः हिन्दी में होने चाहिए। आइए, प्रौद्योगिकी के इस युग में हिंदी के उज्ज्वल भविष्य के बीच हम इसके प्रति संवेदनशील बनें और खुद को इसकी प्रगति में भागीदार बनाएं।

★★★

मोबाइल फोन

रामबिलास चौधरी
प्रशासन

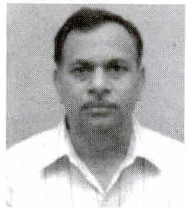

हाथों में मोबाइल लिए और
चेहरे पर स्माइल लिए
आज की युवा पीढ़ी का है कहना
कि मोबाइल है हमारा गहना।
जो कल था वो आज नहीं हो सकता।
हर किसी को चाहिए मोबाइल
क्योंकि यही है आज का स्टाइल।

जरूरत के नाम पर स्टाइल बन बैठा है।
चाहे संग साथी न हो पर साथी बन बैठा है।
जो न रखे मोबाइल वह पिछड़े वर्ग का कहलाता
बिना इसके कोई कहीं नहीं जाता है।

माना मोबाइल से होते अनेक
फायदे हैं।
पर क्या भूल गए समाज के
भी कुछ कायदे हैं।
सड़क पर चलते वक्त बात
करना जरूरी है।
जरा बताओ ऐसी भी क्या मजबूरी है।
एफ.एम. रेडियो बने अच्छे मोबाइल की पहचान
बिना इसके मोबाइल की न कोई शान
आज का मोबाइल तो भविष्य भी बताता है
छोटी सी स्क्रीन पर सब वाइड आता है
रेडियो, एलबम, अलार्म सुबह समय जगाता है
छोटा सा बटन जाने कितने करतब दिखाता है

★★★

हर पल मैं खुश हूँ

अनिल कुमार
सचिव, प्रशासन

काम में खुश हूँ,, आराम में खुश हूँ।
आज पनीर नहीं, दाल में ही खुश हूँ।
गाड़ी नहीं, पैदल ही खुश हूँ।
आज कोई नाराज है,, उसके इस अंदाज से ही खुश हूँ।
जिसको देख नहीं सकता, उसकी आवाज से ही खुश हूँ।
बीता हुआ कल जा चुका है,, उसकी मीठी याद में ही खुश हूँ।
आने वाले कल का पता नही, इंतजार में ही खुश हूँ।
हंसता हुआ बीत रहा है पल, आज में ही खुश हूँ।
जिंदगी है छोटी, हर पल मैं खुश हूँ।

★★★

कृत्रिम दिल

अजय पाल
वित्त विभाग

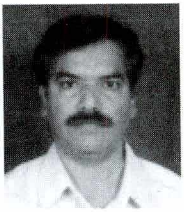

कल रात अचानक सीने के बाईं ओर हुआ मुझको दर्द का अहसास,
शायद मेरा दिल अभी तक मौजूद है, इस बात का होने लगा विश्वास,
सोचकर ये कि इस नायाब चीज को बचाया जाए।
तय किया कि चलकर किसी डॉक्टर को दिखाया जाए।

डॉक्टर ने ज्योंही मेरे दिल को टटोला,
अचंभित सा देखता हुआ मुझसे बोला।
आपका दिल है खराब, बदलना पड़ेगा जनाब।
मैं थोड़ा घबराया, थोड़ा सा सकुचाया, फिर डॉक्टर से फरमाया,
आप भी कैसी बात करते हैं डॉक्टर, आजकल दिल मिलता कहाँ है जो आप बदलने की बात करते हैं।
डॉक्टर बोला जान बचानी है तो करनी होगी दिल की तलाश
हमने कहा देख लीजिए करके प्रयास।

कुछ दिन बाद डॉक्टर ने मुझे अपने क्लीनिक पर बुलाया
फिर अत्यंत हर्ष के साथ मुझे यह समाचार सुनाया
बोला श्रीमान अभी हाल में हुआ है एक चमत्कार
कर लिया है हमने कृत्रिम दिल का अविष्कार
डॉक्टर ने मुझे पास बुलाया और समझाने लगा
और धीरे–धीरे कृत्रिम दिल की खूबियां बताने लगा।।

यह पाषाण की तरह सख्त होगा,
भावनाओं और संवेदनाओं का स्थान इसमें रिक्त होगा,
इस दिल को नहीं होगी किसी भी प्रकार की पीड़ा,
ना ही यह उठाएगा पराए दर्द का बीड़ा,
और एक बात तो बड़ी विशेष है,
जो बतानी अभी बाकी है,
इस दिल में ना ही कोई प्यार का अंकुर फूटेगा,
और न ही ये दिल कभी टूटेगा,
मैंने कहा उसमें कौन सी है बड़ी बात,
और क्यों करते हो, हमसे खिलवाड़े जज्बात
लगता है आपको हुई बदगुमानी कुछ खास है,
अरे इस तरह का दिल तो आसकल सबके पास है।।

★★★

जांच जो हैं सेहत के लिए जरूरी

अनिल कुमार
सचिव, प्रशासन

खून की जांच

- इसके तहत हीमोग्राम किया जाता है। इससे हमारे शरीर में खून की कमी का पता लगता है।
- ब्लड कैंसर के शुरूआती दौर का पता लग सकता है और किसी संक्रमण का पता लग सकता है।
- ब्लड शुगर की जांच से डायबिटीज का पता लग सकता है।
- लिपिड प्रोफाइल से शरीर में मौजूद चर्बी का पता चलता है कि आपके शरीर में गुड कोलेस्ट्रॉल यानी एचडीएल और बैड कोलेस्ट्रॉल की क्या स्थिति है।
- खून की जांच से ट्राइग्लिसराइटस का पता चलता है जिसके नियंत्रण में रहने से कई बीमारियों से बचाव हो सकता है।

लिवर की जांच

- लिवर की जांच से पता चलता है कि उसमे कोई गड़बड़ी तो नहीं है। यह जांच इसलिए जरूरी है कि अपने देश मे काफी संख्या मे लोग शराब और सिगरेट का इस्तेमाल करते हैं।
- हमारे खाने में काफी अशुद्धता है जिसका असर लिवर की सेहत पर पड़ता है इसलिए लिवर की जांच जरूरी है।

केएफटी जांच

- केएफटी यानी किडनी फंक्शन टेस्ट से पता चलता है कि गुर्दे ठीक से काम कर रहे हैं या नहीं।

टीएफटी जांच

- अगर गले में सूजन हो तो इसे हल्के में न लें। यह थॉयराइड या गोएटर का संकेत हो सकता है। इसकी मुख्य वजह यह है कि हमारे यहां शहरी क्षेत्र में पानी के अंदर आयोडीन की कमी है। ज्यादातर छोटे बच्चे महिलाएं और लड़कियां इसकी चपेट में आ जाते हैं। इसके लिए रक्त की जांच की जरूरत पड़ती है। इसे टीएफटी जांच कहा जाता है।

छाती का एक्सरे टेस्ट

- हमारे देश में ट्यूबरकुलोसिस आम समस्या है। छाती के एक्सरे से इसका पता चलता है। हमारे देश में कम उम्र से ही लोग धूम्रपान करने लगते हैं और लंबे समय तक धूम्रपान करते हैं या तंबाकू चबाते हैं। इससे लंग कैंसर या टीबी होने का खतरा बढ़ जाता है। छाती के एक्सरे से यह जल्दी पकड़ में आ जाता है और फिर इसका उपचार आसान हो जाता है।

ईसीजी

इससे हमारे दिल के बारे में पता चलता है कि उसकी क्या स्थिति है। इस टेस्ट से समय रहते हार्टअटैक के खतरे की पहचान हो जाती है और फिर उपचार आसान हो जाता है।

अल्ट्रासाउंड

पथरी की बीमारी, पेट के टयूमर, स्वेलिंग, एबनार्मिलिटी हो गई तो इसकी पहचान के लिए अल्ट्रॉसाउंड कराना जरूरी होता है। यानि अगर आप इसकी जांच कराते रहते हैं तो इन समस्याओं की जानकारी समय रहते मिल जाएगी और आप अनेक बड़ी समस्याओं से बच जाएंगे।

यूरीन स्टूल जांच

आपके शरीर में कोई भी संक्रमण हों यूरीन की जांच से उसका पता लगाया जा सकता है। खासकर महिलाओं के लिए यह टेस्ट बहुत जरूरी है। स्टूल टेस्ट खासकर बच्चों और महिलाओं को नियमित रूप से कराना चाहिए। महिलाओं और बच्चो में एनीमिया और कैल्शियम के स्तर का पता स्टूल टेस्ट से चल जाता है।

✶✶✶

कुछ उपयोगी नुस्खे

रामजी गुप्ता

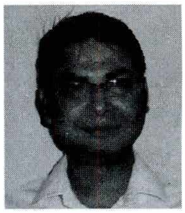

1. चोकर खाने से शरीर की प्रतिरोधक शक्ति बढ़ती है। इसलिए सदैव गेहूँ मोटा ही पिसवाना चाहिए और छानना नहीं चाहिए।
2. गेहूँ का आटा 15 दिन पुराना और चना, ज्वार, बाजरा, मक्का का आटा सात दिन से अधिक पुराना प्रयोग नहीं करना चाहिए। परन्तु शहरों में यह सुविधा बहुत कम उपलब्ध है।
3. हृदयरोगी के लिए अर्जुन की छाल, लौकी का रस, तुलसी, पुदीना, मौसमी, सेंघा नमक, गुड़, चोकर युक्त आटा औषधियाँ हैं।
4. खाने के लिए सेंघा नमक सर्वश्रेष्ठ होता है उसके बाद काले नमक का स्थान होता है।
5. भोजन पकाने के बाद उसमें नमक डालने से ब्लडप्रेशर बढ़ता है।
6. मीठे में मिश्री, गुड़, शहद, देशी चीनी का अधिक प्रयोग करना चाहिए।
7. नींबू गंदे पानी के रोग (यकृत, टाइफाइड, दस्त, पेट के रोग तथा हैजा) से बचाता है।
8. तुलसी के सेवन से मलेरिया नहीं होता है।
9. सरसों, तिल, मूंगफली या नारियल का तेल और देशी घी ही खाना चाहिए, रिफाइण्ड और वनस्पति घी के प्रयोग से बचना चाहिए।
10. जल जाने पर आलू का रस, हल्दी, शहद, घृतकुमारी में से कुछ भी लगाने पर जलन ठीक हो जाती है, फफोले नहीं पड़ते।

11. फल, मीठा और घी या तेल से बने पदार्थ खाकर तुरन्त जल नहीं पीना चाहिए।
12. मुलहठी चूसने से कफ बाहर आता है और आवाज मधुर होती है।
13. भोजन के पश्चात पान, गुड़ या सौंफ खाने से पाचन अच्छा होता है।
14. देर रात तक जागने से शरीर की प्रतिरोधक शक्ति कमजोर हो जाती है।

★★★

हम खुश होना नही जानते

भुवन दास
एस.एन.एल.पी.

हम खुश होना नहीं जानते हैं, क्योंकि हम खुश होना ही नहीं चाहते हैं। हम खुशी बाहर ढूंढ़ते हैं, जबकि खुशी हमारे अन्दर है। हमारे पास इतने संसाधन हैं खुश होने के लिए, पर हम छोटी–छोटी चीजों के लिए दुखी होते हैं।

हमारे पास खुश होने के लिए हमारा शरीर ही सब से अनमोल रत्न है। हमारे पास बुद्धि है, जिसके द्वारा हम संसार बदलने की काबलियत रखते हैं। ईश्वर ने हमें बहुत ही बारीकी से तैयार किया है, जिससे संसार की सारी संरचना को महसूस कर सकते हैं, सुंदर आंखें हैं, जिससे हम इतनी सुंदर सृष्टि का अवलोकन कर सकते हैं। अगर हमारे पास आंखें नहीं होतीं तो क्या होता? हमारी आंखें कितनी कीमती हैं, यह उनसे पूछना चाहिए, जिसके पास आखें नहीं हैं। इसी प्रकार हमारे शरीर का एक–एक अंग कीमती है, जब हमें किसी कारणवश कोई अंग हानि होती है या अविकसित रह जाता है या रंग रूप नहीं मिलता है तो हम कुंठित हो जाते हैं। यह सब हमारी संकीर्ण मानसिकता के कारण ही होता है, अगर खुश होना है तो इन तुच्छ लोभ–लालसा से बाहर आना ही पड़ेगा।

हम सुबह–सुबह जब उगते सूर्य को देखते हैं, तब कितनी लालिमा लिए उमंग भरी नजरों से सूर्य हमें निहारता है, मंद–मंद शीतल पवन हमें अपनी बाहों में भर लेती है, रंग–बिरंगे खिल–खिलाए फूल हमारे स्वागत के लिए तैयार रहते हैं। पंछी का चहकना, तितलियों का तराना, बादलों की अटखेलियां, समंदर का गरजना, इन सबमें एक संगीत का एहसास होता है। हमारे पास जब खुशी आती है तो हम छुपाने की कोशिश करते है, और यह सोचते हैं कि हमारी खुशी को किसी की नजर न लग जाए। हम दूसरों से संवेदना प्राप्त करना चाहते है। सारांश यह है कि दुखों को छुपाना चाहिए, और खुशी को बाँटना चाहिए। खुशी बाटनें से दुगुनी हो जाती है। हमेशा ईमानदारी से अपना काम करना चाहिए। बस इसी से हम सब खुश रह सकते हैं।

★★★

धैर्य

दीपांकर गांगुली
एस.एन.एल.पी.

प्रकृति हमें कई माध्यम से धैर्य का पाठ पढ़ाती है। एक नन्हीं सी चींटी सिखाती हैं कि धैर्य के साथ आगे बढ़ो, मंजिल तक पहुंच ही जाओगे। चींटी दस में से नौ बार असफल होने के बाद भी दाना लेकर अपने बिल तक पहुंच ही जाती है।

कबीरदास जी कहते हैं–

"धीरे–धीरे रे मना धीरे सब कुछ होय।
माली सींचे सौ घड़ा, ऋतु आए फल होय।।"

इसका आशय यह है कि एक बीज को पौधा बनने में एवं फल देने में समय लगता है, जिसका हम सभी को धैर्य के साथ इंतजार करना चाहिए किन्तु धैर्य का मतलब यह कदापि न समझें कि कर्म करना बंद कर सिर्फ इंतजार करें क्योंकि कर्म तो जीवन की अनिवार्य प्रक्रिया है। बीज को पानी एवं खाद की भी आवश्यकता होती है, सिर्फ बीज बो देने से ही फल नही मिलता। जीवन की इसी सच्चाई को हमें समझना चाहिए और अपने लक्ष्य को सफलतापूर्वक पाने के लिये धैर्य के साथ निरंतर प्रयास करना चाहिए। धैर्य तो वह तत्व है जो हमें श्रेष्ठ बनाता है।

"ज्ञानी काटे ज्ञान से, अज्ञानी काटे रोय।
मौत, बुढ़ापा आपदा, सब काहू को होय।।"

कबीर दास जी के दोहे से यह स्पष्ट होता है कि, संसार में रहते हुए विपरीत परिस्थितियां अथवा आपत्तियां आना एक स्वाभाविक प्रक्रिया है किन्तु जो अपने विवेक को धारण किए हुए धैर्य के साथ आगे बढ़ता है, वही संसार में इतिहास रचता है। कहने के लिए तो संसार में शेर, हांथी, सर्प आदि मनुष्य से अधिक शक्तिशाली प्राणी मौजूद हैं, परन्तु मनुष्य को छोड़कर ऐसा कोई प्राणी नही है जिसके पास विवेक की शक्ति हो। मनुष्य अपने विवेक से महत्वपूर्ण कार्य कर सकता है और उन्नति के मार्ग को संपादित कर सकता है।

हमारे पूर्व राष्ट्रपति ए.पी.जे अब्दुल कलाम देशहित के बारे में दृढ़प्रतिज्ञ एवं धैर्य के प्रतिमान माने जाते हैं। लाखों लोगों के लिए वे एक आदर्श बने हुए हैं और भारत उनके बताए हुए रास्ते पर चलता रहेगा। वह लोगों को प्रेरणा इन शब्दों से देते थे कि

"धैर्य वह सवारी है जो अपने सवार को कभी गिरने नहीं देती,
ना किसी के कदमों में और न ही किसी की नजरों में।"

जीवन की आवश्यक वस्तुएं जब प्राप्त नही होती तब हम अधीर हो जाते हैं या कई बार किसी के चले जाने से हम विचलित हो जाते हैं। जिससे वर्तमान के साथ भविष्य को भी परेशानीयुक्त बना लेते हैं। आपत्तियाँ हमारे विवेक और पुरूषार्थ को चुनौती देने आती हैं, जो इस परीक्षा में पास हो जाता है वही इतिहास रचता है और सफलता उसको गले लगाती है। संसार में जितने भी महापुरुष हुए हैं, उनकी महानता का कारण धैर्य एवं सहिष्णुता ही है। धैर्य और विश्वास जीवन की वह कुंजी है, जो सफलता के ताले को खोलती है। जिसके पास धैर्य है वो जो चाहे पा सकता है।

★★★

पर्यावरण संरक्षण बनाम शहरी विकास

धर्मेन्द्र कुमार शर्मा
परियोजना अभियंता

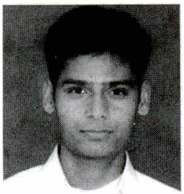

अगर आज के वक्त में हम बात करें तो न ही तो हम पर्यावरण संरक्षण कर पा रहे हैं और न ही शहरी विकास। जहाँ तक मुझे शहरी विकास की परिभाषा समझ में आती है तो वह यह है कि दुनियां में उपलब्ध तकनीक का इस्तेमाल करके सुख सुविधाओं और सुरक्षा की चीजों को बढ़ाना। लेकिन क्या आप जानते हैं कि यूरोप व अमेरिका ने जो नई–नई तकनीक दी हैं उनसे पर्यावरण का नुकसान ही हुआ है। यह सोंच गलत है कि इसे जितना चाहो भोगो। ऐसे लोगों को पर्यावरण की सुरक्षा से कोई मतलब नहीं होता। हम उस देश में रहते हैं जहाँ पर्यावरण के लिए ईशोपनिषद का प्रथम श्लोक ही पर्यावरण सुरक्षा के बारे में कहता है:

"ईशा वास्यमिदं सर्वं यत्किंच जगत्यां जगत।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः मागृधः कस्यस्विद्धनम्।।

मतलब यह कि इस संसार में जो कुछ भी चर या अचर है, वह सब भगवान के द्वारा है। हम उनमें से अपने मतलब की सभी वस्तुओं का त्यागपूर्वक भोग कर सकते है। केवल भोग ही भोग सम्भव नहीं है। तो हमारे देश में तो प्रकृति को सुरक्षित रखने के लिए उपनिषदों में भी लिखा गया है। अगर हम लोग बिना त्याग के प्रकृति की वस्तुओं का भोग करेंगे तो हमारे बाद आने वाली पीढ़ी उन वस्तुओं को जान भी नहीं पाएगी। और अगर यही सिलसिला चलता रहेगा तो प्रकृति एक दिन नष्ट हो जाएगी।

हमारे देश में दो वर्ग के लोग हैं – शिक्षित वर्ग और अशिक्षित वर्ग। शिक्षित वर्ग की कोई इकाई ऐसी भी है जो आज भी मानसिक रूप से अंग्रेजों अर्थात यूरोप और अमेरिका के गुलाम हैं। ये लोग अंग्रेजों को अपना आदर्श मानते हैं और अपने आप को उनके सामने बहुत छोटा। यूरोप व अमेरिका जैसे देश पर्यावरण के लिए हानिकारक पुरानी तकनीक से बनी वस्तुओं को भारत में बेचकर तरक्की करते हैं। हमारे देश का अधिकांश हिस्सा आज भी प्राकृतिक उत्पादों का सेवन करता है और यह प्रयास सराहनीय है।

शहरों में विकास के नाम पर आज बड़े–बड़े कारखाने खुल रहे हैं। उन कारखानों में कुछ केमिकल के भी है। क्या आप जानते हैं उनसे निकलने वाले जहरीले केमिकल्स किस तरीके से हमारे पर्यावरण को दूषित कर रहे हैं। 1983 का भोपाल गैस काण्ड इसका एक उदाहरण है। आज अगर शहरों में सड़कें और फ्लाईओवर बने हैं तो उन पर दौड़ने वाली कारों, बसों ने हमारे पर्यावरण को काफी हद तक दूषित कर दिया है। ऊंची–ऊंची इमारतों के बन जाने से उनमें लगे हुए इलैक्ट्रानिक उपकरण जैसे टी.वी., रेफ्रिजरेटर, ए.सी. पर्यावरण के लिए हानिकारक हैं।

अन्त में मैं यही कहूँगा कि विकास उस तकनीक से होना चाहिए जो हमारे पर्यावरण के लिए हानिकारक न हो। हम उन वस्तुओं का इस्तेमाल करें जो पर्यावरण को किसी भी तरीके से प्रभावित न करे।

★★★

जिंदगी की हकीकत

अजय पाल
वित्त विभाग

क्या खूब लिखा है किसी ने बख्श देता है खुदा
उन्हें जिनकी किस्मत खराब होती है।
वो हरगिज नहीं बख्शे जाते,,
जिनकी नीयत खराब होती है।

ना मेरा एक होगा, ना तेरा लाख होगा।
ना तारीफ तेरी होगी, ना मजाक मेरा होगा।
गुरुर ना कर इस शरीर का तेरा भी
खाक होगा, मेरा भी खाक होगा।

जिंदगी भर ब्राण्डेड–ब्राण्डेड करने वाले
याद रखना कफन का कोई ब्राण्ड नहीं होता।
कोई रोकर दिल बहलाता है,
कोई हंसकर दर्द छुपाता है।
क्या करामात है, कुदरत की,
जिंदा इंसान पानी में डूब जाता है।
और मुर्दा तैर कर दिखाता है।

मौत को देखा तो नहीं पर बहुत खूबसूरत होगी
कम्बख्त जो भी उससे मिलता है,
जीना छोड़ देता है।
गजब की एकता देखी जमाने में,
जिंदों को गिराने में और मुर्दों को उठाने में
जिंदगी में ना जाने कौन सी बात आखिरी होगी।
ना जाने कौन सी रात आखिरी होगी,
मिलते–जुलते बातें करते रहो यारों एक दूसरे से,
ना जाने कौन सी मुलाकात आखिरी होगी।

★★★

रिश्ता

रामजी गुप्ता
परियोजना अभियंता

रूठना मनाना तो सिर्फ अपनापन है 'मित्र,
मीठी तकरार में मनाने का सुखद अहसास है रिश्ता।

कभी माँ–बाप कभी भाई–बहन कभी बेटा–बेटी,
सबको एक धागे में बंधे होने का अहसास है रिश्ता।

कितने मिलकर बिछड़ गए छोटी सी जिन्दगी में,
उनकी भूली बिसरी यादों का प्यारा संसार है रिश्ता।

बड़े ही जतन से रखे जाते हैं ये अपनों के दिल,
सदा ही उनको बचाए रखने का अहसास है रिश्ता।

जिन्दगी के सफर में सुकून का अहसास है रिश्ता
सात जन्मों तक भी न टूटे साथ ऐसा विश्वास है रिश्ता।

जो गमों के समंदर से खीच लाता है बाहर
ऐसे ही निश्छल प्यार का एक अहसास है रिश्ता।

कभी सिन्दूर की लाली कभी चूड़ियों की खनक,
दिलों को जोड़ने का एक प्यारा अहसास है रिश्ता।।

* * *

ईमानदारी से बड़ी कोई विरासत नहीं है।
– विलियम शेक्सपियर

चाय का कप

पुनीत सिंह खुराना
प्रोजेक्ट एसोसिएट

याद है मुझे अभी तक
चाय का वह कप
जो बड़े अधिकार से
तुमने मुझसे मंगाया था
और मैंने वह कप
अपने हाथ से
तुम्हारे हाथ में थमाया था।

याद है मुझे अभी तक
कप भरा हुआ था
तुमने आधा मांगा था
सो नाराजगी से मेरी ओर देखा था
वो तुम्हारे देखने का अंदाज
मैं शरामाई थी लजाई थी
थोड़ा घबराई भी थी।

याद है मुझे अभी तक
कांपते हाथों से मैंने
आधी चाय को दूसरे कप में उड़ेला था
फिर उस आधी बची चाय को
अमृत समझकर बड़े प्यार से
अपने होठों से लगाया था।

याद है मुझे अभी तक
इससे पहले बातें हमने
जुबाँ से नहीं नजरों से की थी
तुमने मेरी नजरों की भाषा
और मैंने तुम्हारी नजरों की भाषा
समझी थी जानी थी
पहचानी थी।

याद है मुझे यह भी
शायद याद होगा तुम्हें भी
इस चाय के कप ने
मेरी जिंदगी बदल डाली थी
और इसके बाद मेरी निगाहें
तुम्हारी एक झलक देखने के लिए
बेचौन रहने लगी थी।

याद है मुझे सब कुछ
नहीं याद तो सिर्फ इतना
जिंदगी के किस मोड़ पर
किस पल कौन सी
ऐसी भूल कर दी मैंने
कि तुम्हें पा न सकी
तुम्हारी बन ना सकी।।

★★★

भारत के विकास के लिए भारतीय भाषाएं जरूरी क्यों?

पलविन्द्र सिंह
प्रोजेक्ट असिस्टेंट–I
एस.एन.एल.पी.

प्रिय भारतीयो, भारतीय जीवन के बहुत ही महत्त्वपूर्ण क्षेत्रों में अंग्रेज़ी भाषा के दखल से भारत को बहुत भारी नुकसान हो रहे हैं। इस दखल का सबसे बड़ा कारण कुछ भ्रम हैं जो हमारे दिलो–दिमाग में बस गए हैं, या बसा दिए गए हैं। यह भ्रम हैं: 1. अंग्रेजी ही ज्ञान–विज्ञान, तकनीक और उच्चतर ज्ञान की भाषा है, 2. अंग्रेजी ही अंतरराष्ट्रीय आदान–प्रदान और कारोबार की भाषा है, और 3. भारतीय भाषाओं में उच्चतर ज्ञान की भाषाएं बनने का सामर्थ्य नहीं है।

पर तथ्य बताते हैं कि ये धारणाएं भ्रम मात्र हैं और इनके लिए कोई अकादमिक या व्यावहारिक प्रमाण हासिल नहीँ हें। इस सम्बन्ध में ये तथ्य विचारणीय हैः 1) 2012 में स्कूल स्तर की विज्ञान शिक्षा में पहले 50 स्थान हासिल करने वाले देशों में अंग्रेजी में शिक्षा देने वाले देशों के स्थान तीसरा (सिंगापुर), दसवां (कनाडा), चौहदवां (आयरलैंड) सोहलवां (आस्ट्रेलिया), अठाहरवां (न्यूजीलैंड) और अठाईसवां (अमेरिका) थे। इन अंग्रेजी–भाषी देशों में भी शिक्षा अंग्रेजी के साथ–साथ दूसरी मातृभाषाओं में भी दी जाती है। 2006 और 2009 में भी यही रुझान थे। एशिया के प्रथम पचास सर्वोतम विश्वविद्यालयों में एकाध ही ऐसा है जहां शिक्षा अंग्रेजी माध्यम में दी जाती है और भारत का एक भी विश्वविद्यालय इन पचास में नहीं आता 3. सत्रहवीं सदी में (जब एकाध भारतीय ही अंग्रेजी जानता होगा) दुनिया के सकल उत्पाद में भारत का हिस्सा 22 (बाईस) प्रतिशत था। 1950 में दुनिया के व्यापार में भारत का हिस्सा 1.78 प्रतिशत था और अब केवल 1.50 प्रतिशत है 4. दुनिया भर के भाषा और शिक्षा विशेषज्ञों की राय और तजुर्बा भी यही दर्शाता है कि शिक्षा सफलतापूर्वक केवल और केवल मातृ–भाषा में ही दी जा सकती है 5. चिकित्सा विज्ञान के कुछ अंग्रेजी शब्द और इनके हिंदी समतुल्य यह स्पष्ट कर देंगे कि ज्ञान–विज्ञान के किसी भी क्षेत्र के लिए हमारी भाषाओं में शब्द हासिल हैँ या आसानी से प्राप्त हो सकते हैं: Haem – रक्त; Haemacyte – रक्त–कोशिका; Haemagogue – रक्त–प्रेरक; Haemal – रक्तीय; Haemalopia – रक्तीय–नेत्र; Haemngiectasis – रक्तवाहिनी–पासार; Haemangioma – रक्त–मस्सा; Haemarthrosis – रक्तजोड़–विकार; Haematemesis – रक्त–वामन; Haematin – लौहरक्तीय; Haematinic – रक्तवर्धक; Haematinuria – रक्तमूत्र; Haematocele – रक्त–ग्रन्थि सूजन; Haematocolpos – रक्त–मासधर्मरोध; Haematogenesis – रक्त–उत्पादन; Haematoid – रक्तरूप; Haematology – रक्त–विज्ञान; Haematolysis – रक्त–ह्रास; Haematoma – रक्त–ग्रन्थि।

भारतीय शिक्षा संस्थाओं का दयनीय दर्जा, विश्व व्यापार में भारत का लगातार कम हो रहा हिस्सा, भाषा के मामलों में विशेषज्ञों की राय और वर्तमान अन्तरराष्ट्रीय भाषा व्यवहार और स्थिति इस बात के पक्के सबूत हैं कि मातृ–भाषाओं के क्षेत्र अंग्रेजी के हवाले कर देने से अभी तक हमें बहुत भारी नुकसान हुए हैं और इससे न तो हमें अभी तक कोई लाभ हुआ है और न ही होने वाला है। भारत का दक्षिण कोरिया, जापान, चीन जैसे देशों से पीछे रह जाने का एक बडा कारण भारतीय शिक्षा और दूसरे क्षेत्रों में अंग्रेजी भाषा की दखल है।

यह सही है कि वर्तमान समय में विदेशी भाषाओं का ज्ञान आवश्यक है। पर यहाँ भी तजुर्बा और खोज यही साबित करते हैं कि मातृ–भाषा माध्यम से शिक्षा हासिल करने वाला और विदेशी भाषा को एक विषय के रूप मे पढ़ने वाला विद्यार्थी विदेशी भाषा भी उस विद्यार्थी से बेहतर सीखता है, जिसे आरम्भ से ही विदेशी भाषा माध्यम में शिक्षा दी जाती है। इस संदर्भ में यूनेस्को की 2008 में छपी पुस्तक (इम्प्रूवमेंट इन द क्वालिटी आफ़ मदर टंग – बेस्ड लिटरेसी ऐंड लर्निंग, पन्ना 12) से यह जुमला बहुत महत्वपूर्ण है: "हमारे रास्ते में बड़ी रुकावट भाषा एवं शिक्षा के बारे में कुछ अवधारणा हैं और लोगों की आंखें खोलने के लिए इन अवधारणाओं का पर्दाफाश होना चाहिए। ऐसा ही एक अवधारणा यह है कि विदेशी भाषा सीखने का अच्छा तरीका इसका शिक्षा के माध्यम के रूप में प्रयोग है (दरअसल, अन्य भाषा को एक विषय के रूप में पढ़ना ज्यादा कारगर होता है)। दूसरी अवधारणा यह है कि विदेशी भाषा सीखना जितनी जल्दी शुरू किया जाए उतना बेहतर है (जल्दी शुरू करने से लहजा तो बेहतर हो सकता है पर लाभ की स्थिति में वह सीखने वाला होता है जो मातृ–भाषा में अच्छी महारत हासिल कर चुका हो)। तीसरी अवधारणा यह है कि मातृ–भाषा विदेशी भाषा सीखने की राह में रुकावट है (मातृ–भाषा में मजबूत नींव से विदेशी भाषा बेहतर सीखी जा सकती है)। स्पष्ट है कि ये अवधारणा हैं और सत्य नहीं। लेकिन फिर भी यह नीतिकार इस प्रश्न पर अगुवाई करते हैं कि प्रभुत्वशाली (हमारे संदर्भ में अंग्रेज़ी) भाषा कैसे सीखी जाए।"

(इस लेख में दिए गए तत्थ और विवरण डॉ. जोगा सिंह के लेख "भाषा नीति पर अंतरराष्ट्रीय खोज" में से लिए गए हैं।)

★★★

हमें तो हिन्दी भाषा को इस योग्य बना देना है कि वह साधारण से साधारण मजदूर से लेकर अत्यंत विकसित मस्तिष्क के बुद्धिजीवी के दिमाग में समान भाव से विहार सकें।

– आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी

जुआरी (Gambler)

राजेन्द्र सिंह
परियोजना अधिकारी
कार्यकारी निदेशक कार्यालय

जब भी हम जुआ या जुआरी शब्द सुनते हैं तो हमारा ध्यान सीधे सीधे ताश के पत्तों, पांडवों के समयकाल में खेले गये चौसर, लाटरी के टिकट एवं शेयर सौदे पर जाता है। लेकिन यह सत्य नहीं है क्योंकि जुआ एक बहुआयामी शब्द है। दरअसल, कोई भी वह कार्य या व्यसन जो हममें बिना यथार्थ और निरन्तर प्रयास के शीघ्रता से धनवान बनने की चाहत उत्पन्न करता हो, वह जुआ है। उदाहरणार्थ, आज हमारे समाज में फैला हुआ भ्रष्टाचार, अपने सुख के लिए दूसरे को दुखी करना, अपने स्वार्थ हेतु झूठ बोलना, किसी के प्रति बुरे भाव रखना इत्यादि, सभी जुएं की श्रेणी में आते हैं। मेरी राय में, आधुनिक युग की राजनीतिक शक्तियों, न्यायाधीशों एवं अन्य शीर्ष पदों पर विराजमान व्यक्तियों का अपने स्वार्थ हेतु अपनी कलम का दुरूपयोग करना भी एक जुआ ही है क्योंकि इसके परिणामस्वरूप जहां एक निर्दोष दण्डित होता है वहीं एक दोषी साफ बच जाता है जिससे समाज में बुराईयां पैदा होने का खतरा होता है।

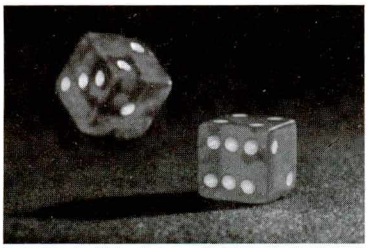

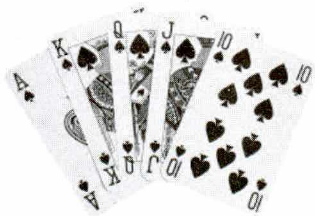

जुआ कोई भी हो, उसे खेलने की आदत न केवल जोखिम भरी है, यह भ्रांति पैदा करने वाली भी है। जुएं के खिलाड़ी न केवल अपना अपितु अपने आस–पास रहने वालों का भी जीवन नर्क बना देते हैं। शुरू शुरू में बेशक जुआं परम सुख से परिपूर्ण महसूस होता हो लेकिन इसके बाद शीघ्र ही जुआरी न केवल आर्थिक रूप से अपितु शारीरिक मानसिक पारिवारिक सामाजिक आध्यात्मिक एवं धार्मिक रूप से भी अपरिपूर्ण हो जाता है। उसके सोचने–समझने की सारी शक्ति क्षीण हो जाती है।

जुएं का सम्बन्ध अहंकार और सशक्त बनने के झूठे अहसास से है। एक जुआरी का यह अवगुण है कि वह आत्मकेन्द्रित हो जाता है। उसे अपने सिवाय जग में कुछ भी नहीं दिखाई देता है। उसे केवल धन–दौलत से प्यार होता है, सम्पन्नता को प्राप्त करने के साधन या पुरूषार्थ से नहीं। किसी दूसरे को मात देने से और उन्हें हारने के लिए मजबूर कर देने से एक जीत का अहसास होता है। सभी जुंआरी जब तक जीतते हैं तब तक स्वयं को बहुत बुलंदियों पर महसूस करते हैं लेकिन जब हारना आरम्भ करते हैं तो बहुत शीघ्र नीचे आ जाते हैं। मुँह के बल नीचे गिरते हैं एवं एक क्षण में उनका अहंकार चकनाचूर हो जाता है।

दो चार जुएं जीता क्या, छूने लगा बुलंदियॉ
बाद एक हार के ही, जमीं पर फिसल गया।

दस्तूर है जहां का ये, गिरते हैं सभी यहां
गिरना सफल उसी का है, जो गिरके फिर संभल गया।

बना के सीढ़ी और की, वो आगे क्या निकल गया
जोर से कहने लगा, सब कुछ उसी को मिल गया।

करता था दावा शौक है, उसे खेलने का आग से
जरा सी आंच क्या लगी, कि मोम सा पिघल गया।

चला के ये हवायें व, दिखाना चाहता था क्या
जो गई झोपड़ी गरीब की, तो उसका भी महल गया।

आज हम सब जानते हैं कि जुआं खेलने का व्यसन व्यक्तिगत एवं सामाजिक तौर पर एक बढ़ती हुई समस्या है। हर बार जब कोई व्यक्ति अच्छाई के स्थान पर बुराई को, चुनौतीपूर्ण के स्थान पर शिथिल मार्ग को, सच्चाई के स्थान पर बेईमानी को चुनता है, तो वह हर बार एक जुआ खेल रहा है। वह उस माया के साथ जुआ खेल रहा है जिसे भ्रम भी कहा जाता है। यह माया तो खिलाड़ी है, जो जीतने के लिए रक्त की प्यासी है। माया हमें धोखा देने के लिए, भ्रष्टाचारी बनाने के लिए, ठगने के लिए, एवं हमें मात देने के लिए कुछ भी करेगी। माया हमें जीत का अहसास करवाती है, मगर इसका अहसास हमें बहुत देर में होता हैं कि हम हर जीत एवं हर हार के साथ हमेशा से हारते आ रहे हैं। दुर्भाग्यवश जब हमें यह एहसास होता है तब तक बहुत ही देर हो जाती है, एवं हमारा सारा स्वाभिमान छिन चुका होता है।

जुएं की जीत भी एवं हार भी मीठी होती है। एक बार जिसे इसकी लत लग जाती हो तो छोड़ना थोडा, कठिन कार्य है लेकिन असम्भव नहीं है। यह बात याद रखने योग्य है कि मनुष्यविशेष की जीत जुएं में जीतने से नही अपितु कछुए की भांति प्रतिदिन संयुक्त एवं सकारात्मक पुरूषार्थ करने में है। इसका कारण यह भी है कि ऐसा करने से हम अपनी नियति को किसी असम्भव संभावना के हाथों में छोड़ने के बजाय अपने कर्मो में विश्वास को ज्यादा महत्व दे रहे हैं। यह भी सत्य है कि कर्मप्रधान व्यक्ति कभी भी किसी भी प्रकार के जुएं में विश्वास कर ही नहीं सकता है एवं एक जुआरी कभी भी एक कर्मठ इंसान नहीं हो सकता है।

आओ आज यह संकल्प करें कि हम समाज में विद्यमान सभी प्रकार के जुए को जड़ से उखाड़ कर एवं सभी जुआरियों को सद्मार्ग पर लाकर एक स्वस्थ समाज की स्थापना करने की कोशिस करेंगे।

★★★

बचपन के एहसास

राजेन्द्र सिंह
परियोजना अधिकारी
कार्यकारी निदेशक कार्यालय

बचपन में यों ही वो मेरे, सपनों में आए थे ।
दांतों में उंगली डाल के, जरा मुस्कराए थे ।
तब तो हम अनजान थे, दुनियां की राह से।
पर हमने उनको दिल से, निकलने नहीं दिया।

तब से अब तलक हमें, उन्हीं की है तलाश।
पर हमारे अपनों ने हमें, मिलने नहीं दिया।
कई बार पहुंचे हैं हम, खुदकुशी के मोड़ पर।
पर दुआएं ऐसी गहरी हमें, मिटने नहीं दिया।

बिछा दी हमने जिन्दगी, एहसासों की राह में।
रहते हैं बांवरे से, एक दूजे की चाह में।
यों तो हर डगर पे चलना, मुश्किल बहुत हुआ।
उनका अनदिखा सहारा, कि गिरने नहीं दिया।

दोनों घरों ने मिलके, कोशिशें तो खूब की।
दिल के सांचे में और को, हमने ढलने नहीं दिया।
मिलते न थे कि फिर भी, होती रही थी बातें।
दिल बेशक थे मोम के, पिघलने नहीं दिया।

होने लगे हैं बूढ़े, बिरह की आग सहते।
थक से चुके हैं दोनों, अपनों से कहते कहते।
चेहरों को हमारे अब भी, रहती है इन्तजारी।
इसपे गुलाल किसी और को, मलने नहीं दिया।

जाती तो हैं हर यादें, आंखों से मोती ला के।
दोनों ही थक चुके हैं, किस्सा भुला भुला के।
सावन में यादें जब भी, सताती हैं बड़ के आगे।
एहसास पूरा होता, बांह–ए–ख्वाबों में झुला के।

एक दूजे को हैं समझे, अमानत अपनी सी ही।
कहानी अपनी ऐसी, कई बातें अनकही सी।
छोड़ा है खाना पीना, लगाया है ध्यान ऐसे।
संभाले हैं झूले ऐसे, कभी गिरने नहीं दिया।

***

संसार की कोई लिपि यदि सर्वाधिक पूर्ण है तो
एकमात्र देवनागरी ही है।
– राजर्षि पुरूषोत्तम दास टण्डन

राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के संबंध में सी-डैक, नोएडा द्वारा किए गए कार्यो का विवरण

सोमी राम
हिन्दी अधिकारी

सी–डैक, नोएडा सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय, भारत सरकार की एक वैज्ञानिक संस्था की संघटक इकाई है। यह केन्द्र अनुसंधान और विकास के क्षेत्र में कार्य करता आ रहा है। इसमें स्वास्थ्य सूचना विज्ञान, इम्बेडिड सिस्टम, भाषा प्रौद्योगिकी, ई–प्रशासन आदि के अलावा शैक्षणिक स्कंध में गुणवक्ता युक्त जन–शक्ति का विकास किया जाता है। सी–डैक, नोएडा शिक्षा, अनुसंधान एवं उत्पाद विकास के बीच तालमेल पर बल देता है। संक्षेप में यह केन्द्र वैज्ञानिक एवं तकनीकी संगठन है और राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के लिए यथा–संभव प्रयास कर रहा है।

यह केन्द्र अन्य कार्यालयों के द्वारा हिन्दी में किए जाने वाले कार्यो को सरल एवं सुगम बनाने के लिए वांछित सॉफ्टवेयर टूल्स का विकास भी कर रहा है। जैसे भारतीय भाषाओं के लिए अंग्रेजी से भारतीय भाषा में मशीनी अनुवाद, भारतीय भाषाओँ में परस्पर मशीनी अनुवाद, स्पीच से स्पीच अनुवाद, ऑपटिकल कैरेक्टर रिकग्निशन (ओ.सी.आर.) आदि। इस केन्द्र द्वारा राजभाषा हिन्दी के क्षेत्र में किए गए कार्यों का ब्यौरा निम्नलिखित है:

1. सी–डैक, नोएडा की राजभाषा कार्यान्वयन समिति का गठन किया गया है।
2. उपर्युक्त समिति की वर्ष में 4 बैठकें नियमित रूप से आयोजित की जा रही हैं।
3. हिन्दी की शैक्षिक योग्यता से संबंधित अधिकारियों एवं कर्मचारियों का रोस्टर तैयार किया जाता है।
4. इस समय लगभग सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त है।
5. वर्ष में हिन्दी कार्यशालाओं का आयोजन किया जा रहा है।
6. यह कार्यालय राजभाषा नियम 10 (4) के अन्तर्गत अधिसूचित है।
7. राजभाषा नियम 1976 के नियम 8(4) के अन्तर्गत कुछ विषय विनिर्दिष्ट किए गए हैं जिनका कार्य केवल हिन्दी में किया जा रहा है।
8. ज्यादा से ज्यादा पत्राचार हिन्दी में करने के प्रयास किए जा रहे हैं, पहले की तुलना में काफी प्रगति हुई है।
9. धारा 3(3) के अन्तर्गत सभी कागजात द्विभाषी रूप में जारी किए जा रहे हैं।

10. हिन्दी नोटिंग / ड्राफ्टिंग प्रोत्साहन योजना लागू है।
11. सभी फार्म द्विभाषी रूप में उपलब्ध हैं और प्रचलन में लाए जा रहे हैं।
12. विज्ञापन द्विभाषी रूप में जारी किए जा रहे हैं।
13. तिमाही प्रगति रिपोर्टें मुख्यालय व राजभाषा विभाग को नियमित रूप से भेजी जा रही है।
14. नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की छमाही बैठकों में नियमित रूप से भाग लिया जाता है।
15. वर्ष में एक बार विभिन्न विभागों / स्कूलों का हिन्दी निरीक्षण किया जाता है।
16. प्रत्येक वर्ष हिन्दी सप्ताह का आयोजन किया जाता है जिसके दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है तथा विजेताओं को पुरस्कृत किया जाता है।
17. वार्षिक हिन्दी पत्रिका 'अभिव्यक्ति' के छः अंक प्रकाशित हो चुके हैं। इस वर्ष इसका सातवां अंक प्रकाशित किया जा रहा है।

उपर्युक्त को देखते हुए इस केन्द्र में हिन्दी के उत्तरोत्तर प्रयोग में पर्याप्त प्रगति हुई है। भविष्य में इन कार्यों को सुचारू रूप से करने के अलावा हिन्दी के प्रयोग को नई दिशाएं देने के लिए अनवरत प्रयास किए जाते रहेंगे। इसके अलावा, हिन्दी कार्यशालाओं के लिए एक छोटी बुकलेट तैयार की जा रही है जोकि कार्यशालाओ में भाग लेने वालों को दी जाएंगी। इसके अतिरिक्त, इस संगठन द्वारा एक बृहद एवं अद्यतन सूचना प्रौद्योगिकी शब्दावली का निर्माण किया जा चुका है और अब उसमें अधिक संशोधन कर शब्दों की संख्या बढ़ाने की योजना भी बनाई जा रही हैं।

★★★

देवनागरी ध्वनिशास्त्र की दृष्टि से अत्यंत वैज्ञानिक लिपि है।
— रविशंकर शुक्ल

हिन्दी पखवाड़ा - 2014

सी–डैक, नोएडा में हिन्दी पखवाड़ा 2014 के अवसर पर 08 सितम्बर से 22 सितम्बर 2014 तक विभिन्न हिन्दी प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। इसका उद्देश्य राजभाषा हिन्दी के प्रयोग एवं प्रचार–प्रसार को बढ़ावा देना और अधिकारियों और कर्मचारियों के बीच हिन्दी का अनुकूल वातावरण सृजित करना था। इन विभिन्न प्रतियोगिताओं के संबंध में एक रिपोर्ट नीचे प्रस्तुत की गई है, साथ ही प्रथम पुरस्कृत श्रेष्ठ निबंध को भी आपके समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है।

हिन्दी निबंध प्रतियोगिता

प्रथम – श्री रवि पयाल, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी, स्कूल ऑफ इलैक्ट्रॉनिक्स (निबंध नीचे प्रस्तुत है)

द्वितीय – सुश्री मुक्ति प्रिया, ट्रेनी, एस.एन.एल.पी.

तृतीय – श्री विजय सिंह, परियोजना अभियंता, एस.एन.एल.पी.

हिन्दीतर – सुश्री लक्ष्मी कल्याणी, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी, ई–लर्निंग

हिन्दी नोटिंग/ड्राफ्टिंग प्रतियोगिता

प्रथम – सुश्री पल्लवी गुप्ता, परियोजना अभियंता, एस.एन.एल.पी.

द्वितीय – सुश्री प्रिया गोयल, ट्रेनी, एस.एन.एल.पी.

तृतीय – सुश्री अनुराधा शर्मा, परियोजना अभियंता, एस.एन.एल.पी.

हिन्दीतर – श्री अमीय मोहंती, परियोजना अभियंता, एस.एन.एल.पी.

हिन्दी भाषण प्रतियोगिता

प्रथम – श्री पलविन्दर सिंह, परियोजना सहायक, एस.एन.एल.पी.

द्वितीय – श्री वीरेन्द्र छेत्री, परियोजना सहायक एस.एन.एल.पी.

तृतीय – श्री विजय सिंह, परियोजना अभियंता, एस.एन.एल.पी.

हिन्दीतर – श्री भुवन दास, पी.एस.एस., एस.एन.एल.पी.

हिन्दी टंकण प्रतियोगिता

प्रथम – श्री नवीन चन्द्र, पी.एस.एस., एस.एन.एल.पी.

द्वितीय – श्री प्रमोद कुमार, पी.एस.एस., एस.एन.एल.पी.

तृतीय – श्री भूपेन्द्र कुमार, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी, एस.एन.एल.पी.

हिन्दीतर – श्री भुवन दास, पी.एस.एस., एस.एन.एल.पी.

'अखिल भारतीय परीक्षाओं में हिन्दी का वैकल्पिक उपयोग'

भारत एक सवा अरब की आबादी वाला देश है। इस सवा अरब की आबादी वाले देश में इंडिया और भारत दोनो रह रहे हैं और भारतीय संविधान और लोकतंत्र को अमल कर रहे है। हमारी राष्ट्रभाषा हिन्दी है, पर आज भी ऐसा लगता है कि जब भी योग्यता को जांचने के संदर्भ में कोई भी परीक्षा होती है, उसमें राष्ट्रभाषा को पीछे छोड़ दिया जाता है। यही कारण है कि हम आज भी हिन्दी राष्ट्र होकर भी अपनी भाषा को ठीक से नहीं जान पाए हैं और विश्व में वो स्थान नहीं बना पाए है जहाँ पर होना चाहिए था।

आज भी हम अखिल भारतीय परीक्षाओं में हिन्दी का वैकल्पिक प्रयोग ही कर रहे हैं, जबकि आजादी के अड़सठ सालों के बाद अब हिन्दी को परीक्षाओं में अनिवार्य कर देना चाहिए था। इसका कारण क्या है? क्यों हम हिन्दी को वो स्थान नहीं दे पाए जो हमारी राष्ट्रभाषा को मिलना चाहिए था। हम आजाद तो हो गए, पर आज भी अंग्रेजी के 'हैंगओवर' से नहीं निकल पाए। हम ये तर्क दे सकते हैं कि अंग्रेजी का ज्ञान होने से हम लोगों को नौकरी पाने में आसानी होती है और अगर सोचा जाए तो सही भी है। क्योंकि हमारे समाज की मानसिकता शुरू से रही है कि अंग्रेजी भाषा का ज्ञान जरूरी है और हिन्दी भाषा तो बस काम चलाने के लिए है और स्कूल की परीक्षा पास करने के लिए है और इसे समझा जाए तो काफी हद तक सही भी है क्योंकि आज भी हमारे देश में स्कूल की शिक्षा के बाद अगर कोई छात्र उच्च शिक्षा जैसेकि इंजीनियरिंग और मेडिकल डिग्री के लिए जाता है तो वहां पर सारा पाठ्यक्रम अंग्रेजी भाषा में है। इससे ये पता चलता है कि आज भी मानसिक रूप से हम अंग्रेजी के गुलाम है, जिसको कि अंग्रेज हम पर थोपना चाहते थे और कही ना कहीं वो सफल रहे। अगर आज हम अखिल भारतीय परीक्षाओं में हिन्दी का वैकल्पिक प्रयोग कर रहे है तो ये एक सराहनीय कदम है पर कहीं ना कहीं सोचने को मजबूर करती है।

अभी हाल में ही संघ लोक सेवा आयोग की परीक्षाओं में हिन्दी भाषा को लेकर काफी छात्रों ने प्रदर्शन किया। कोई भी छात्र भाषा के खिलाफ नहीं था, पर भाषा के इस्तेमाल को लेकर था। संघ लोक सेवा आयोग ही अपने अंग्रेजी के प्रश्नों को हिन्दी में बदलने के लिए अगर 'गूगल' का इस्तेमाल करेगा तो इससे दयनीय स्थिति क्या होगा। हम सभी को पता है कि 'गूगल' में हमारी हिन्दी की क्या हालत है। हमारे लोक सेवा आयोग को चाहिए कि वो हिन्दी को सही और आसान शब्दों का भी इस्तेमाल परीक्षा में करें और छात्रों को भी चाहिए कि अगर वो हिन्दी में उत्तर दे रहे हैं तो उन्हें पहले आत्ममंथन करके सोचना चाहिए कि हमारी हिन्दी काम चलाऊं है या फिर वाकई हम हिन्दी को अच्छी तरह से जानते है।

अगर भारत विश्व के कई देशों को देखें तो पाइएगा कि चीन, जापान, फ्रांस, जर्मनी इत्यादि देशों में सफलता प्राप्त करने के लिए या फिर इन देशों की सरकारी नौकरी पाने के लिए अंग्रेजी भाषा का ज्ञान होना जरूरी नहीं। वहां पर मातृभाषा का ज्ञान होना चाहिए। अगर हमें इसको अपनाना है तो सबसे पहले रस मानसिकता से ऊपर आना पड़ेगा कि व्यापार, संचार की भाषा अंग्रेजी है। इसको अपनाने के लिए हमें सामाजिक और राजनीति सोच बदलनी पड़ेगी। सरकार को इंजीनियरिंग, मेडिकल, वकालत इत्यादि पाठ्यक्रम हिन्दी में भी चलाने चाहिए। इन पाठ्यक्रमों में इस्तेमाल होने वाली पुस्तकों को भी बढ़ाना चाहिए। ताकि हमारे देश के वो छात्र जोकि हिन्दी में अपनी शिक्षा शुरू से प्राप्त कर रहे है, वो स्कूली शिक्षा के बाद उच्च शिक्षा में परेशानी न सहें और उनकी प्रतिभा को जंग ना लगे।

इस तरह से धीरे–धीरे परीक्षाओं में हिन्दी का वैकल्पिक प्रयोग सफल होगा और एक दिन ऐसा भी आएगा जब हम अखिल भारतीय परीक्षाओं में हिन्दी अनिवार्य कर देंगे और इसको लेकर कोई छात्र, कोई राजनीतिक आंदोलन नहीं होगा।

संविधान कहता है हि हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा है और प्रत्येक भारतीय को इसका ज्ञान अनिवार्य है।

★★★

संसदीय राजभाषा समिति द्वारा सी–डैक, का राजभाषायी निरीक्षण

संसदीय राजभाषा समिति द्वारा सी–डैक, का राजभाषायी निरीक्षण

कार्यकारी निदेशक महोदय द्वारा हिन्दी पत्रिका 'अभिव्यक्ति' छठे अंक का विमोचन

सी–डैक, नोएडा में हिन्दी कार्यशाला

सी–डैक, नोएडा द्वारा हिन्दी के प्रयोग संबंधी विकसित सॉफ्टवेयर

हिन्दी पखवाड़ा के अवसर पर निबंध प्रतियोगिता

हिन्दी पखवाड़ा के अवसर पर नोटिंग/ड्राफ्टिंग प्रतियोगिता

हिन्दी पखवाड़ा के अवसर पर भाषण प्रतियोगिता

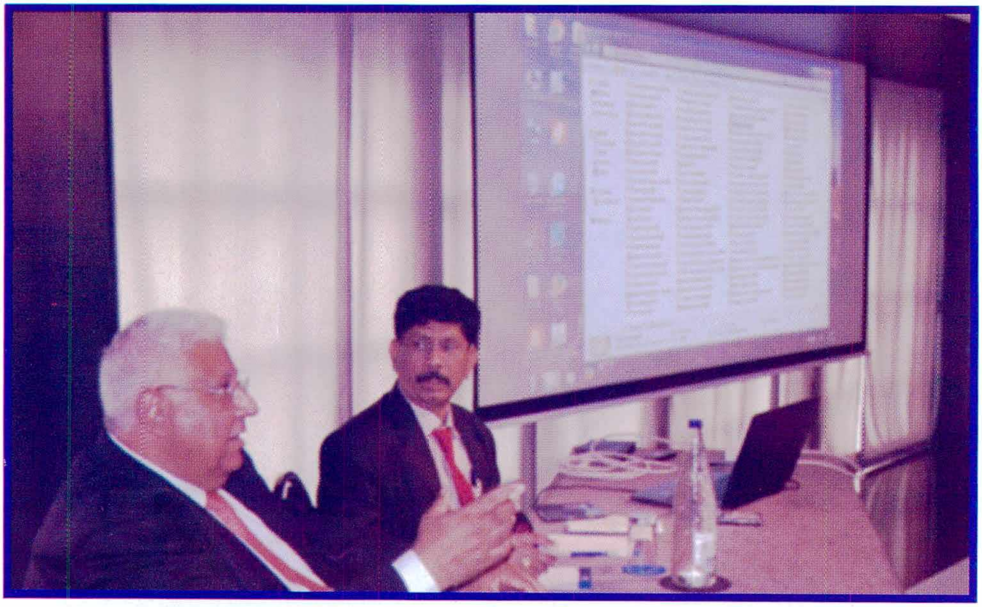

डॉ. बी. के. मूर्ती कार्यकारी निदेशक, सी–डैक, नोएडा ICDP 2015 में Digital Preservation पर आयोजित सत्र की अध्यक्षता करते हुए

डॉ. बी. के. मूर्ती कार्यकारी निदेशक, सी–डैक, नोएडा (CESDT) की स्थापना के लिए अनुबंध पर हस्ताक्षर करते हुए

संयुक्त मूल्यांकन समिति द्वारा सी–डैक, नोएडा का दौरा

श्री ए.एस. शेखावत, अध्यक्ष AIDC डॉ. बी. के. मूर्ती कार्यकारी निदेशक, सी–डैक, नोएडा को सम्मानित करते हुए

रचनाकार: मुकुंद कुमार रॉय

प्रगत संगणन विकास केंद्र

अनुसन्धान भवन, सी-56/1, संस्थागत क्षेत्र
सेक्टर-62, नॉएडा-201307
फ़ोन: 0120-3063311-13, फैक्स: 0120-3063317